# "स्पंदन"

## समाचार - पत्रिका

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास (अजमेर) का त्रैमासिक समाचार पत्र

(सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था पंजीयन सं. 19/ए.जे.एम./87-88)

केवल निजी वितरण हेतु | संयुक्त अंक (27-28) वर्ष (7) | मार्च से अगस्त 2015


**"शिक्षक का नजरिया"** बच्चे के शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है साथ ही बच्चे के विकास की बुनियाद को तैयार करता है। आज भी किसी सफल/असफल व्यक्ति से उसके शिक्षकों के विषय में बात की जाये तो वह तुरन्त यह बता देगा कि फलां शिक्षक ने मुझे अच्छा मार्गदर्शन दिया जिसके कारण मैंने यह सफलता प्राप्त की अथवा इसका उल्टा भी उतना ही सत्य है।

एक ओर जहां भाग-दौड़ वाली जिन्दगी है वहीं दूसरी ओर हर जिम्मेदारी पर बाजारीकरण हावी होता जा रहा है ऐसी स्थिति में शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को कैसे निभाता है यह प्रश्नीय विषय है?

अतः इस अंक में हम पढ़ेगे "शिक्षक के नजरिये" पर डॉ. रॉबर्ट रोजन्थाल द्वारा प्रयोग पर आधारित प्रेरणादायी लेख।

**-राकेश कुमार कौशिक**


**सम्पादक मण्डल**

**मुख्य सम्पादक : राकेश कुमार कौशिक**

**: सम्पादन समिति :**

क्षमा आर. कौशिक, तरुण शर्मा, नानूलाल प्रजापति, पद्मा चौहान, लक्ष्मणसिंह चौहान


## मीनू स्कूल का "लोगो" अब नये कलेवर में

MINU SCHOOL, AJMER

LET'S LEARN TOGETHER

जुलाई 2015 से मीनू स्कूल का "लोगो" परिवर्तित हो गया है जो बताता कि एक शिक्षक एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और सामान्य बच्चे को साथ-साथ लेकर विकास की ओर बढ़ रहा है तथा सन्देश दे रहा है कि **"आओ हम सब साथ-साथ सीखे"**।

# "ये चूहे विशेष रुप से मेधावी है और वे चूहे ठस दिमाग"

डॉ. रॉबर्ट रोजन्थाल को विश्व में "उम्मीद प्रभाव" (**Expectancy Effect**) पर किये गये अपने शोध और

प्रयोगों के लिये जाना जाता हैं। सन् 1963 में उन्होने फॉड़ के साथ एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया। उन्होनें प्रयोगकर्ता विद्यार्थियो के एक समूह को कुछ चूहे झूठ-मूठ ये कहकर दिये कि ये चूहे विशेष रूप से मेधावी है और दूसरे समूह को कुछ चूहे ये कहकर दिये कि ये चूहे बहुत ही ठस दिमाग है जबकि असल में सभी चूहे एक ही स्तर के थे।

रोजन्थाल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि प्रयोगकर्ता द्वारा किये गये प्रशिक्षणों में मेधावी चूहो ने बेहतर प्रदर्शन किया जबकि ठस बुद्धि कहकर दिये गये चूहों का प्रदर्शन बहुत खराब रहा।

डॉ. रोजन्थाल ने अध्यापक और छात्रो पर भी इसी प्रकार के प्रयोग किये और इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त किये।

डॉ. रोजन्थाल का सबसे प्रसिद्ध अध्ययन उन्होंने 1963 में लिनोर जौक्सबसन के साथ दक्षिण सन-फ्रॉसिस्को के प्राथमिक विद्यालय में किया। उन्होंने कुछ बच्चों के रैण्डम सेम्पल लिये। उनके शिक्षकों को ये कहा कि ये बच्चे अपने शिक्षा क्षेत्र में बहुत उपलब्धि प्राप्त

करेगें। ये बात केवल शिक्षकों को बताई । अभिभावकों और विद्यार्थियों को नहीं। इन विद्यार्थियों ने सचमुच बहुत अच्छा प्रदर्शन किया । और अन्य विद्यार्थी इस तरह प्रदर्शन नहीं कर सके। हालांकि डॉ. रोजन्थाल ने किसी बच्चे के लिये यह नहीं कहा की वह पढ़ाई मे ठस रहेगा। (ऐसा कहना उनके अनुसार अनैतिक होता।) पर उनका मानना है कि उनके प्रयोग इस मान्यता को प्रमाणित करते है कि बहुत से बच्चे इस लिये ठस हो जाते है क्योंकि उनके शिक्षक उनसे ठस होने की अपेक्षा रखते हैं।

प्रदर्शन का ये अन्तर विशेषत: कक्षा 1 व 2 के विद्यार्थियों में अधिक देखने को मिला। इसका प्रमुख कारण ये है कि छोटे बच्चों पर अध्यापक का प्रभाव या असर प्रमुखता से पड़ता है क्योंकि वो एक सम्मान योग्य विशेषज्ञ है। इस शोध रिपोर्ट को न्यूयार्क टाईम्स ने मुख-पृष्ठ पर छापा । पत्र के संपादकों ने माना कि ये रिपोर्ट मुख-पृष्ठ पर छापने के काबिल है । यह इस बात का प्रमाण है कि बुद्धि के लिये प्रयुक्त हमारे मापक कितने अतर्क पूर्ण है । कितने बच्चे सिर्फ इस बात के कारण सचमुच बुद्धु या ठस बन गये होंगे कि उनके अध्यापक उन्हें बुद्धु या ठस मानते थे। अखबार की रिपोर्ट में कहा गया है कि डॉ. रोजन्थाल ने नैतिक कारणों से बच्चों के किसी समूह को बुद्धु बच्चों का समूह नहीं कहा । पर देश में शायद ही कोई विद्यालय होगा जिसमें बुद्धु बच्चों के समूह ना बना रखे हों, ताकि बच्चे और उनके शिक्षक दोनों ही स्पष्ट रूप से जान लें कि वे क्या हैं।

न्यूयॉर्क टाईम्स में छपी शोध रिपोर्ट के बाद हर उस शिक्षक को थोड़ी शर्म आनी चाहिये जो माता-पिता से कहता है कि उनके बच्चे की सीखने की क्षमता कम है। पर साथ ही ऐसे शिक्षकों को दोष देना भी पूरी तरह ठीक नहीं है। उन्होंने दिमाग (बुद्धि)के लिये जो रूपक अपना लिये है (बुद्धि की जो अवधारणा बना ली है ) वे डॉ. रोजन्थाल के शोध की व्याख्या नहीं कर सकते और शायद उन्हें विश्वास भी न हो कि सचमुच ऐसा हो सकता है। एक खाली घड़ा यह कह देने भर से भरा नही हो जायेगा कि ''वह भरा घड़ा'' है। बुनियाद भी कह देने भर से अधिक पक्की नहीं हो जायेगी। एक बगीचा भी हरा-भरा कह देने भर से ऐसा हो नहीं जायेगा। अत: यह समझने के लिये कुछ समय लगाने की जरूरत है कि रोजन्थाल के अध्ययन में आखिर हुआ क्या होगा।

पहली बात तो यह कि दो अलग-अलग घटनाएं है रिपोर्ट में। पहली घटना तो उन चूहों की है जिन्होनें अपने को तीव्र बुद्धि का होने का प्रमाण दिया। क्योंकि उनके प्रयोगकर्ता उन्हें तीव्र बुद्धि चूहों के रूप में देखते थे। जैसा कि उन्हें कहा गया था। क्या चूहों ने 'सचमुच' तीव्र-बुद्धि होने का प्रदर्शन किया? हम मान सकते है कि चूहों ने न तो 'बुद्धिमता पूर्ण' व्यवहार किया, न ही 'बुद्धुपने' का । उन्होंने बस उस परिस्थिति में व्यवहार किया। यह व्यवहार 'बुद्धिमानी' का था या 'बुद्धुपने' का, यह व्यवहार पर कम और इसे देखने और इसका मूल्यांकन करने वाले मानवों के नजरिये पर अधिक निर्भर करता है । शायद हुआ कुछ ऐसा: प्रयोगकर्ताओं ने चूहों को 'तीव्र-बुद्धि' चूहों की श्रेणी में मान लिया। फिर उनके व्यवहार में उन चीजों को छांटने लगे जो उनकी इस मान्यता से संगत थी । उन्होंने व्यवहार के और चूहों की हलचल के वे टुकड़े ही 'देखे' जो उन्हें 'तीव्र-बुद्धि' ठहराते हों । उन्होंने चूहों का 'बुद्धिमता पूर्ण' व्यवहार देखा, क्योंकि वे ऐसा ही देखना चाहते

थे। जो प्रयोगकर्ता 'बुद्धु' कहे जाने वाले चूहों को देख रहे थे उन्होंने भी समान कारण से उनका बुद्धु व्यवहार ही देखा। इसके बारे में हमारे विश्वासों का नतीजा होता है। हम चीजों को वैसी नहीं देखते जैसी के वे है, बल्कि वैसी देखते हैं जैसे कि हम हैं।

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का मामला भी ऐसा ही है, पर एक अतिरिक्त आयाम के साथ। शिक्षकों ने इन बच्चों को 'तीव्र-बुद्धि' के रूप में देखा, क्योंकि वे ऐसी ही अपेक्षा रखते थे। प्रयोगकर्ताओं की तरह ही यह 'वास्तविकता' शिक्षकों ने बनाई। पर हम मान सकते है कि एक बार जब शिक्षकों ने यह 'तीव्र-बुद्धि' बच्चो की 'वास्तविकता' बना दी तो बच्चे अपनी ही 'वास्तविकता' बनाने लगे। बच्चों ने अपने व्यवहार को अपने शिक्षकों की सकारात्मक अपेक्षाओं के अनुरूप ढालना आरम्भ कर दिया। दूसरे शब्दों में बच्चों ने अपने ही बारें में अपना नजरिया बदल लिया। और यह उन्होंने इसलिये किया क्योंकि उनके परिवेश ने उनके अपने प्रयोजनों और मान्यताओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

यदि निष्कर्ष की बात करें तो यह प्रयोग बताता है कि लोग तब अच्छा प्रदर्शन करते है जब उनसे अच्छे प्रदर्शन की आशा या उम्मीद रखते है। उदाहरण के लिये पढ़ाई के समय शिक्षक बुद्धिमान बच्चों (शिक्षक की मान्यतानुसार ) पर ज्यादा ध्यान देते है, व्यक्तिगत चर्चा करते है, बहुत गहरा फीडबैक देते है, ज्यादा सहमति देते है, दयालुता पूर्ण हाव-भाव दिखाते है। दूसरी ओर कम आशा/उम्मीद वाले विद्यार्थियों पर कम ध्यान देते है उन्हें कक्षा में दूर अथवा पीछे बिठाते है और पढ़ने और सीखने की सामग्री कम उपलब्ध कराते है। **(न्यूयॉर्क टाईम्स के छपे लेख और डॉ. राबर्ट रोजन्थाल की वेब साइट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर )**

**शोधार्थी राबर्ट पेन्टा ने बच्चों के सन्दर्भ में अध्यापकों को व्यवहार सुधार के लिये कुछ सुझाव दिये। वे निम्नलिखित है :-**

1. **अवलोकन :** अध्यापक को अवलोकन करना चाहिये कि हर विद्यार्थी कैसे बातचीत करता है? वे क्या करना/कहना पसंद करते है? तथा अवलोकन करना एवं समझना कि वे बच्चे कार्य करने में सक्षम है।
2. **सम्मिलित करना :** अध्यापक को बच्चों से बातचीत द्वारा उनकी चीजें में रूचि जानना चाहिये। विशेष बच्चों को सलाह के बजाय सुना जाये।
3. **सुनना :** अध्यापक को समझने की कोशिश करनी चाहिये कि बच्चों को क्या उत्प्रेरित करता है? उनके उद्देश्य क्या है? और वे कैसे अपने सहपाठी, या आपके द्वारा दी गई-प्रश्नावली तथा आपको देखते है।
4. **प्रयोग :-** अध्यापक को बच्चों के व्यवहार पर तुरंत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करनी चाहिये, तथापि यह वास्तविकता समझनी चाहियें, कि उनके द्वारा प्रदर्शित व्यवहार केवल आप तक पहुँचने का निमित मात्र है।
5. **मिलना :-** अध्यापक को हर सप्ताह कुछ समय निकालकर बच्चों से मिलना चाहिये। बच्चों द्वारा कोई खेल या गतिविधि का चुनाव स्वयं करना चाहिये। यहां अध्यापक का रोल पढ़ाना नहीं अपितु उन्हें देखना, सुनना तथा संक्षेपित करना कि आपके द्वारा उनमें रूचि क्या है और वे किसमे अच्छा प्रदर्शन करते हैं।
6. **उन तक पहुँचना :** अध्यापक को यह जानना चाहिये कि बच्चे स्कूल के बाहर क्या करना चाहते हैं। ऐसे बच्चों को 'प्रोजेक्ट' उनकी रूचि अनुसार दिया जाये, जिसमें वे सुविधाजनक रूप से कार्य करते है। प्रोजेक्ट का माध्यम संगीत, लेखन कुछ भी हो सकता है। ऐसी व्यवस्था अध्यापक करे कि बच्चे अध्यापक

के साथ बातचीत व अनुभव साझा करे। अध्यापक यह अवलोकन करें कि बच्चे, कितनी रूचि, लगन, दिमागी कसरत तथा उत्प्रेरण के साथ कार्य करते है। अध्यापक उनकी नजर से स्कूल को देखना प्रारंभ करें।

7. **प्रतिबिम्ब** : अध्यापक स्वयं अपने सबसे खराब और सबसे अच्छे अध्यापक के बारे में सोचे। तथा हर एक के लिये 5 शब्द लिखे जो उन्हें रेखांकित करते हो, व्यवहार प्रदर्शित करते हो। उनके व्यवहार से आपको क्या महसूस होता था? अब अध्यापक यह सोचे कि उनके विद्यार्थी उन्हें कैसे रेखांकित करते है। अध्यापक यह लिखे, कि वे आपके लिये क्या रेखांकित करते है और क्यों ? तथा किस प्रकार से आपकी इच्छा या विश्वास उनके नजरिये से बदलते है अथवा समानानंतर रहते हैं अध्यापक को यह जानने की सतत् कोशिश करनी चाहिए।

**(राबर्ट पैन्टा की वेबसाईट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर)**

## निम्न सामान हेतु आपके सहयोग की अपेक्षा है

**निम्न सामान/वस्तुओं की संस्था को आवश्यकता है कृपया दानी व्यक्ति/संस्थायें सम्पर्क करें।**

(1) सोलर लाईट्स

(2) सिन्टेक्स टंकी

(3) व्हाइट बोर्ड

(4) रेम्प हेतु स्टील रेलिंग

(5) गमले

(6) बच्चों हेतु यूनिफार्म/स्वेटर/केप

(7) एल.ई.डी. लाईट्स

(8) कम्प्यूटर

सम्पर्क सूत्र- 9461569228

# सहयोग हेतु आपको धन्यवाद।

## दानदाताओं की सूची-द्वारा गीव इण्डिया

**आजीविका संवर्धन हेतु सहयोगकर्ता :-**

| | |
|---|---|
| ◎ ज्वसूर्यारा जू पेड्डी | 14000रू. |
| ◎ रामाकृष्णन जयरामन | 14000रू. |
| ◎ पवन शर्मा | 7000 रू. |
| ◎ अपूर्व गुप्ता | 7000 रू. |
| ◎ राहुल ततीनेनी | 7000 रू. |
| ◎ विक्रम सिंगला | 7000 रू. |
| ◎ प्रेम बालगंगाधर | 7000 रू. |
| ◎ नितिन कुलकर्णी | 7000 रू. |
| ◎ रोहित काईला | 7000 रू. |
| ◎ हितेश पटेल | 7000 रू. |

**शैक्षणिक गतिविधियों हेतु सहयोगकर्ता :-**

| | |
|---|---|
| ◎ सर्बिना खान | 7500 रू. |
| ◎ श्रीनिवास गोवडा | 2500 रू. |
| ◎ सुरेश कनौजिया | 2500 रू. |
| ◎ अपर्णा रॉय | 2500 रू. |
| ◎ शिव कुमार थोलकप्पियन | 2500 रू. |
| ◎ राजेश ठाकुर | 2500 रू. |
| ◎ रेबका नन्स | 2500 रू. |
| ◎ राजा एस. | 2500 रू. |

**व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु सहयोगकर्ता :-**

| | |
|---|---|
| ◎ लिज़ेन रफैल | 1700 रू. |
| ◎ खुशबू माहेश्वरी | 1700 रू. |
| ◎ सुमित वाधवा | 1700 रू. |
| ◎ अमित कुमार जैन | 1700 रू. |
| ◎ मेहुल पारेख | 1700 रू. |
| ◎ नवनीत लूथरा | 1700 रू. |
| ◎ श्रीराम मंकल | 1700 रू. |
| ◎ नेहा वर्मा | 1700 रू. |
| ◎ माईक्रोसॉफ्ट मैचिंग गीफ्ट्स प्रोग्राम | 1700 रू. |
| ◎ फरहादीबा सईद | 1700 रू. |
| ◎ नेहा गुप्ता | 1700 रू. |

**अन्य सहयोगकर्ता :** मैसर्स एन.ए. डेन्टिंग शॉप अजमेर, श्रीमती हीरा तारा जयपुर, श्रीमान् पाठक जी अजमेर, मैसर्स हरिओम किराणा स्टोर, अजमेर, अखिल भारतवर्षीय मरूधर केसरी परमार्थिक समिति, श्री लक्ष्मण सिंह चौहान, श्रीमती प्रियंका सिंह, श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री मुकेश बारवानी, श्री कालू बारवानी, मैसर्स महागुरू मार्केटिंग, श्री मोतीराम मंगलचन्द, श्री नीरज जैन, श्री सेंकी अग्रवाल एवं श्री रफीउला आदि।

**श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदा संस्था सड्. क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।**
**यस्याभ्यं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयित्वय एव ।।**

कोई शिक्षक अपने विषय को अच्छी तरह जानता है,तो कोई शिक्षक विद्यार्थियों को पढाने में निपुण होता हैं। अतः शिक्षकों में श्रेष्ठ शिक्षक का पद उसी को प्रतिष्ठित करना चाहिए जो विषय-विशेषज्ञ होने के साथ-साथ विद्यार्थियों को पढाने में भी निपुण हो।

# सुर्खियां – मार्च 2015 से अगस्त 2015

❍ 04 मार्च, 2015 मीनू स्कूल के बच्चों के साथ कनाडा से आये विद्यार्थियों ने मिलकर होली उत्सव मनाया। बच्चों ने ग्रिटिंग कार्ड बनाये जिसके माध्यम

से एक–दूसरे को होली की बधाई दी गई एवं भाई–चारे का सन्देश दिया गया।

❍ 09 मार्च, 2015 मीनू स्कूल परिसर में कनाडा से आये विद्यार्थियों के स्वागत के लिए

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कनाडा से आये विद्यार्थियों व उनके शिक्षकों का संस्था सचिव श्री सागर मल कौशिक व वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी राकेश कुमार कौशिक ने साफा व माला पहनाकर स्वागत किया। विद्यालय के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

❍ 15 मई, 2015 को मीनू स्कूल परिसर में बच्चों का वार्षिक उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सामान्य बच्चों के साथ–साथ विशेष

आवश्यकता वाले बच्चों की प्रतिभा को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमान् इमेन्युअल, विशेष अग्रवाल, अशूद अग्रवाल और दीपिका सुराना उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में 156 बच्चों ने भाग लिया व विभिन्न भूमिकाओं में अपनी भागीदारी निभाई।

❍ 15 मई, 2015 को मीनू स्कूल परिसर में वार्षिक अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों की वार्षिक प्रगति, आगामी लक्ष्य व छात्र समस्या को लेकर बातचीत की गई। इस अभिभावक बैंठक में 80 अभिभावकों ने भाग लिया।

❍ 12 से 14 जून, 2015 तक राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किया

गया जिसमें मानसिक मंद बच्चों के मूल्यांकन उपकरणों जैसे F.A.C.P. & V.A.P.S. की जानकारी दी गई प्रशिक्षण में NIMH दिल्ली के अब्दुल माजिद और मंजूषा सिंह उपस्थित थे।

- 22 से 24 जून, 2015 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें अंग्रेजी

भाषा की व्याकरण व उच्चारण सम्बन्धी समस्याओं की जानकारी दी गई। सम्मिलित शिक्षा कक्षा में अंग्रेजी भाषा बच्चों को सिखाना जिससे शिक्षक अंग्रेजी में आ रही समस्याओं को समझा सकेगें। बलजीत कौर ने सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षण दिया।

- 01 जुलाई, 2015 : मीनू स्कूल मे प्रवेशोत्सव बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। 13 नव प्रवेशी बच्चों का तिलक लगाकर व मोली बांधकर स्वागत किया गया। तरूण शर्मा द्वारा विद्यालय स्थापना दिवस की जानकारी दी गई कि विद्यालय में संस्था द्वारा वर्ष 1988 से निरन्तर विशेष आवश्यकता वाले मानसिक विकलांग बच्चों एवं वर्ष 2005 से सम्मिलित शिक्षण प्रशिक्षण देकर समाज में पुनर्वासित किया जा रहा है।

- 17 जुलाई, 2015 मीनू स्कूल में ईद व संस्था स्थापना दिवस मनाया गया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुश्री वन्दना नोगिया (जिला प्रमुख अजमेर) विशिष्ट अतिथि श्रीमान् अशोक भारद्वाज (R.P.S.C. अजमेर), श्रीमान् सूरजकरण गुर्जर (सरपंच चाचियावास) श्री रामलाल (सरपंच माकड़वाली, अजमेर) उपस्थित थे। संस्था का 40वां स्थापना

दिवस कैक काट कर मनाया गया। सुश्री वंदना नोगिया ने बच्चों एवं स्टाफ को ईद व संस्था के 40 वर्ष पूर्ण होने की शुभकामनाएं दी।

- 15 अगस्त, 2015 मीनू स्कूल में स्वतन्त्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमान् सूरजकरण (सरपंच चाचियावास), श्री कल्याण गुर्जर (समाज सेवक), सलोनी कंवर (प्रधानमंत्री बाल संसद मीनू स्कूल), ने ध्वजारोहण किया एवं परेड सलामी दी।

द्वारा विशेष आवश्यकता वाले 15 वर्ष से अधिक के SC/ST वर्ग के 9 बच्चों को शिक्षण–प्रशिक्षण हेतु लेपटॉप वितरित किये गये। पुष्कर विधायक श्रीमान् सुरेश सिंह रावत एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी गौड़, उपनिदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, अजमेर द्वारा बच्चों को लेपटॉप वितरित किये गये। इस अवसर पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के

अभिभावकों को लेपटॉप चलाने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

❍ 25 अगस्त, 2015 को मीनू स्कूल परिसर में अभिभावक बैठक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ कृष्णजन्माष्टमी, रक्षाबन्धन एवं शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। बच्चों की झाँकियों का अवलोकन विधायक श्रीमान् सुरेश सिंह रावत ने सभी कक्षाओं में जाकर किया एवं बच्चों की झाकियों की प्रशंसा की। विशेष बच्चों के साथ सामान्य बच्चों के इस अनुठे मिश्रण के समायोजन ने उपस्थित

❍ 17 अगस्त, 2015 को संस्था परिसर में शिव सांई धाम मन्दिर में श्रावण माह के उपलक्ष्य पर कावड़ यात्रा व सहस्त्रधारा का आयोजन किया गया जिसमे स्टाफ व बच्चों ने भाग लिया।

❍ 19 अगस्त, 2015 ट्रस्ट फॉर एज्यूकेशन आर्ट मोटिवेशन, जयपुर द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता आयोजक टीम सदस्य नरेन्द्र आन्नदकर ने बताया की चित्र बच्चों को आगे बढ़ाने में सहायक होते है।

❍ 25 अगस्त, 2015 को NIMH सिकंदराबाद

व्यक्तियों को यह सोचने पर मजबूर किया कि विशेष बच्चों में भी अपनी एक प्रतिभा छिपी होती है। जरूरत है, इन्हें सिर्फ मौका देने की। वामन अवतार, द्रोपदी चीर

हरण, कृष्ण सुदामा मिलन, डॉ. राधा कृष्णन, रक्षाबन्धन आदि झाँकिया आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रही।

❍ 28 अगस्त, 2015 को पटेल मैदान अजमेर मे अजयमेरू प्रेस क्लब द्वारा साईकिल रैली का आयोजन किया गया। मीनू स्कूल चाचियावास एवं सी.बी.आर. अजमेर के 30 बच्चों व 11 स्टाफ ने भाग लिया एवं

''साइकिल चलाओं स्वस्थ रहो'' का सन्देश दिया। रैली के दौरान संभागीय आयुक्त, जिला कलेक्टर, महापौर आदि ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

31 अगस्त, 2015 को अरबन हाट, अजमेर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मीनू स्कूल चाचियावास के 18 बच्चों ने भाग लिया एवं नृत्य प्रस्तुति दी।

प्रतिष्ठा में, ____________

मुद्रित सामग्री | बुक पोस्ट

**राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था**
''विश्वामित्र आश्रम''
ग्राम – चाचियावास (जनाना अस्पताल से 4 किमी आगे),
पोस्ट – गगवाना, अजमेर, जिला-अजमेर (राज.) 305023
Email : rmkm_ajm@yahoo.com, rmkm.a@rediffmail.com
Ph.# : 0145-2794481, Fax : 0145-2794482, Mob.: 9829140992

सौजन्य : Vibha
मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, पुरानी मंडी, अजमेर